B.A Part-1 Psychology Paper-1 (General Psychology)
Study material Topic- Thorndike Theory of Intelligence.
Dr. Prabha Shree (Guest Faculty, Deptt of Psychology, Vaishali Mahila College, Hajipur)

बहुकारक सिद्धांत

(Multiple Factor Theory)

बहुकारक सिद्धांत में Thorndike तथा Guilford के सिद्धांतों को रखा गया है। Thorndike ने Spearman के सिद्धांत का खंडन करते हुए कहा है कि बुद्धि सिर्फ दो कारकों (factors) या तत्वों (elements) के मिलने से नहीं होता है बल्कि बुद्धि की रचना बहुत से छोटे-छोटे तत्व या कारकों के मिलने से होता है। प्रत्येक कारक या

तत्व एक विशिष्ट मानसिक क्षमता (specific mental ability) का प्रतिनिधित्व करता है तथा साथ ही साथ एक दूसरे से स्वतंत्र होते हैं। ऐसे ही बहुत सारे कारकों के आपस में मिलने से बुद्धि की रचना होती है, ठीक वैसे ही जैसे अनेक ईटों के मिलने से एक मकान का निर्माण होता है। जिस तरह प्रत्येक ईंट एक दूसरे से स्वतंत्र होते हुए भी अपना योगदान करके एक मकान का निर्माण करता है ठीक उसी तरह से अनेक विशिष्ट मानसिक क्षमता हैं जो एक दूसरे से स्वतंत्र होती हैं तथा मिलकर बुद्धि का निर्माण करती हैं। अतः Thorndike के इस सिद्धांत के अनुसार कोई सामान्य

बुद्धि (general intelligence) नाम की चीज नहीं होती है जैसा कि Spearman ने कहा था। बुद्धि कई विशेष मानसिक क्रियाओं या क्षमताओं का एक योग (aggregate) होता है।

Thorndike के इस सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति के भिन्न-भिन्न मानसिक क्रियाओं (mental acts) के बीच सहसंबंध का कारण 'g' कारक नहीं होता है बल्कि उन मानसिक प्रक्रिया में कई उभयनिष्ठ तत्व (common elements) पाए जाते हैं। दिये हुए मानसिक क्रियाओं में जितने ही अधिक उभयनिष्ठ तत्व होंगे उनके बीच का संबंध उतना ही अधिक होगा। उदाहरणार्थ मान

लिया जाए कि मानसिक कार्य 'x' तथा 'y' में अलग-अलग 10-10 तत्व या कारकों की जरूरत है। इन तत्वों या कारकों में से 8 तत्व ऐसे हैं जो इन दोनों तरह के मानसिक क्रियाओं को पूरा करने में उभयनिष्ठ (common) हैं। ऐसी परिस्थिति में इन दोनों कार्यों के बीच उच्च धनात्मक सहसंबंध होगा। दूसरी तरफ थोड़ी देर के लिए मान लिया जाए कि इन दोनों मानसिक कार्यों के बीच मात्र दो-दो ही तत्व ऐसे हैं जिन्हें उभयनिष्ठ (common) कहा जा सकता है। ऐसी परिस्थिति में इन दोनों कार्यों के बीच धनात्मक संबंध तो होगा, परंतु काफी कम। इस तरह से Thorndike ने तत्वों या कारकों

के उभयनिष्ठता के आधार पर Spearman के 'g' factor की एक तरह से आलोचना की है।

Thorndike का यह भी विचार था कि कुछ मानसिक कार्य ऐसे होते हैं जिनके तत्वों या कारकों में उभयनिष्ठता कम होती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि प्रत्येक ऐसे मानसिक कार्य का स्वरूप भिन्न-भिन्न होता है। उदाहरणार्थ, यदि कार्य 'A' तथा कार्य 'B' ऐसे हैं जिनको पूरा करने में अलग-अलग 20-20 कारकों या तत्वों की जरूरत पड़ती है और उसमें से 15-15 कारक ऐसे हैं जो उभयनिष्ठ ना होकर अउभयनिष्ठ (uncommon) हैं तो ऐसी परिस्थिति में इन

कार्यों के बीच धनात्मक सहसंबंध की मात्रा कम होगी। तत्त्वों या कारकों के बीच इस तरह की अउभयनिष्ठता के कारण ही दो मानसिक कार्यों या उनके मापने के लिए बने परीक्षणों (test) के बीच सहसंबंध पूर्ण (perfect) नहीं होता है। इस तरह की व्याख्या देकर Thorndike ने Spearman के 'S' कारक की भी आलोचना की है क्योंकि इस व्याख्या से स्पष्ट हो जाता है कि दो मानसिक कार्यों या उन्हें मापने के लिए बने परीक्षणों के बीच कम सहसंबंध 'S' कारक के कारण नहीं होता है बल्कि इसलिए होता है क्योंकि इन दोनों मानसिक कार्यों के तत्वों

या कारकों के बीच अउभयनिष्ठता (uncommonness) होती है।

लेकिन ध्यानपूर्वक देखा जाए तो Thorndike का सिद्धांत स्पीयरमैन के सिद्धांत से मौलिक रूप से भिन्न नहीं है। सचमुच में Thorndike ने 'g' कारक को एक तरह से स्वीकार किया है क्योंकि Spearman ने जिसे सामान्य कारक या तत्व (general factor or element) कहा है उसे Thorndike ने उभयनिष्ठ तत्व (common element)कहा है जिसे Spearman ने विशिष्ट कारक (specific factor) कहा है उसे Thorndike ने अउभयनिष्ठ तत्व (uncommon element) कहा है। अगर इन दोनों सिद्धांतों में अंतर

है तो सिर्फ इतना है कि Spearman ने 'g' कारक को छोटी-छोटी इकाइयों (units)या उपकारकों (sub-factors) में नहीं बांटा है जबकि Thorndike इसे कई उपकारकों (sub-factors) का योग (aggregate) माना है।